 ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.01, September: 2023

हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

दीपिका रानी (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, सूरतगढ़ रोड़, हनुमानगढ़ (राज.)
डॉ. ललित कुमार (शोध निर्देशक) शिक्षा विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, सूरतगढ़ रोड़, हनुमानगढ़

प्रस्तावना :–

मनुष्य जीवन की सबसे मधुर एवं सुनहरी अवस्था विद्यार्थी जीवन है। विद्यार्थी अवस्था जीवन की आधारशिला है। यदि नींव सुदृढ़ है तो जीवन यात्रा सफल होती है। आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है। एक सद्नागरिक के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है उन गुणों का प्रथम चरण विद्यार्थी जीवन ही है। विद्यार्थी जीवन वह अवस्था है जिसमें बालक अनेक गुणों का तथा जीवन मूल्यों का संचय करता है, ज्ञानार्जन करता है और मस्तिष्क का परिष्कार करता है।

अनुशासन समाज एवं संगठन की अनिवार्य अपेक्षा है। सामुदायिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतत्रता पर नियंत्रण आवश्यक है। समाज और देश की रक्षा, समृद्धि और विकास में व्यक्तिगत जीवन के नियम सभी सामाजिक नियमों के समान नहीं होते है। ऐसी स्थिति में सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन का विधान व्यक्तिगत जीवन के नियमों से अधिक प्रभावी होता है और उसका पालन करना ही अनुशासन है। जब जीवन में सहिष्णुता होती है, सहनशीलता का गुण स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है। यही गुण अनुशासन है।

आज के युग में अनुशासनहीनता सबसे बड़ी समस्या है। अनुशासन के अभाव में बालक उस छेद वाले घड़े के समान है जिसमें नल से पानी तो भरता जाता है मगर छेद मे से बाहर निकलता रहता है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक अनुशासन बालक के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करते हैं।

अतः शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि विद्यालय में किताबी ज्ञान के साथ–साथ विभिन्न पाठ्य–सहगामी क्रियाएं व सह–अभिवृत्तियां जैसेः– खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान एवं अन्य विषयों से संबंधित कार्यक्रम, एन.सी.सी., एन.एस.एस. एवं स्काउटिंग इत्यादि का होना आवश्यक है जिनसे विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके।

''स्काउटिंग–गाइडिंग आन्दोलन एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन है। विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषमता और भिन्नता होते हुए भी इस संस्था के सदस्यों में सामाजिक उद्देश्य व्याप्त है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रवृति का विस्तार होने के बावजूद यह संस्था अपने विश्वव्यापी कार्यक्रमों और समाज सेवा के पवित्र सिद्धान्तों के प्रति समर्पित है और इतने लम्बे समय का अन्तराल भी इसे अपने सिद्धांतों से विचलित नहीं कर पाया। स्काउटिंग बालक में चरित्र निर्माण एवं नेतृत्व विकास का महान प्रशिक्षण है। इससे सदस्यों में ईश्वर के प्रति सम्मान, देश एवं समाज के प्रति निःस्वार्थ सेवा भावना जागृत होती है। आजकल नैतिक शिक्षा के अभाव में बालक–बालिकाओं को अनुशासनहीनता से बचाने के लिए स्काउटिंग एक सफल प्रयास है क्योंकि यह बालकों को फूड, फन एण्ड फाइट (Food, Fun & Fight) प्रदान करती है जो कि आज के बालक की चाहत है। इसका पाठ्यक्रम बालक को मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करता है।

सह–शैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत स्काउटिंग/गाइडिंग कार्यक्रमों का भी अहम् स्थान है। आज के परिवेश में इसकी महत्ता की वजह से शोधकर्त्ता के मन में **उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन** विषय पर शोध कार्य करने की इच्छा जागृत हुई एवं शोध का विषय चुना।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

प्रस्तुत समस्या अनुसंधानकर्ता की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्काउटिंग–गाइडिंग प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की आश्रम पद्धति का शिविर द्वारा व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत करती है। स्काउटिंग–गाइडिंग का सम्बन्ध आत्मा से होता है। उसमें एंक–दूसरे के प्रति प्रेम एवं भ्रातृ भाव होता है।

स्काउटिंग–गाइडिंग शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास कर विभिन्न कार्यकलापों, प्रशिक्षणों आदि के माध्यम से उन्हे आत्मनिर्भर बन जीने की कला सिखाता है, साथ ही उन्हे स्वावलम्बन की सीख दे कर पुरुषार्थ सिखाता है। स्काउटिंग–गाइडिंग में "आओ यह काम करें'' का नियम है ना कि "आओ यह काम करो" तथा "करके सीखना" स्काउटिंग–गाइडिंग की सैद्धान्तिक विधि है।

उपरोक्त आधार पर कहा जा सकता हैं कि स्काउटिंग–गाइडिंग द्वारा विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक आदि विकास होता है। अतः विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

स्काउटिंग–गाइडिंग शिक्षा को व्यावहारिक धरातल पर उतारने की प्रक्रिया है। ज्ञान, भावना व कर्म तीनों का इसमें समन्वय है। शिक्षा द्वारा अर्जित ज्ञान अमूर्त है परन्तु स्काउटिंग–गाइडिंग के द्वारा जब ज्ञान व्यावहारिक धरातल पर उतर आता है तो वह ज्ञान मूर्त रूप धारण कर लेता है ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष की परीक्षा हो जाती है। शिक्षा ज्ञान का सैद्धान्तिक पक्ष है, परन्तु स्काउटिंग–गाइडिंग का व्यावहारिक पक्ष है। दोनों ही पक्ष एक दूसरे के पूरक है।

शिक्षक का दायित्व केवल छात्रों को व्यावसायिक कुशलता का विकास करके ही पूर्ण नहीं होता है। उनका दायित्व है कि छात्रों की प्रतिक्रिया को समझ सकें, बालक भविष्य में क्या करना चाहता है, क्या बनना चाहता है, तभी वो सही मायने

 Copyright @ 2023 Author

में शिक्षा दे सकता है। अध्यापक का दृष्टिकोण एवं व्यक्तित्व बालक के चरित्र निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं। अतः स्काउटिंग के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति का शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है।

समस्या का कथन :–

हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

शोध के उद्देश्य :–

शोधकर्त्ता ने प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं –

- हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के शहरी शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के ग्रामीण शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है जो इस प्रकार हैं –

1. हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के शहरी शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के ग्रामीण शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.01, September: 2023

7. हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12. हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
13. हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
14. हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
15. हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.25.0 शोध में प्रस्तुत शब्दों की व्याख्या –

स्काउटिंग :– स्काउट शब्द का अर्थ शब्दकोष के अनुसार है – गुप्तचर, भेदिया, जासूस।

लॉर्ड बेडन पॉवल के अनुसार स्काउटिंग एक खेल है जिसको बड़े भाई छोटे भाइयों के साथ मिलकर खेलते हैं और उन्हे खेल–खेल में अच्छे नागरिक बना देते हैं।

- स्काउटिंग और गाइडिंग को स्वावलम्बन और प्रयत्न का आंदोलन कहा जाता है।
- स्काउटिंग व गाइडिंग लड़कों एवं लड़कियों के लिए खेलों के द्वारा नागरिकता के प्रशिक्षण की एक प्रणाली है।

गाइडिंग – लॉर्ड बेडन पॉवल के अनुसार गाइडिंग एक खेल है जिसको बड़ी बहिने छोटी बहिनों के साथ मिलकर खेलती हैं और खेल–खेल में उन्हे अच्छे नागरिक बना देती है।

- लॉर्ड बेडन पॉवल के अनुसार, "मैं समझता हूं कि प्रत्येक बालक किसी न किसी विधि से अपने देश की सहायता करना चाहता है और ऐसा करने की एक बहुत ही सहज विधि है और वह यह है कि वह ब्यॉय स्काउट या गर्ल स्काउट बने।"

अभिवृत्ति –

- संयमित व्यवहार या सोचने का ढंग।
- किसी वस्तु, स्थिति या मूल्य के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने की प्रवृत्ति। साधारणतया भावना या अनुभूति से सम्बन्धित।
- थर्स्टन के अनुसार, किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु या पदार्थ से सम्बन्धित ऋणात्मक या धनात्मक प्रभाव की मात्रा ही अभिवृत्ति है।

शोध की सीमाएँ :–

शोध को विधिवत् सम्पन्न करने के लिए एक निश्चित प्रक्रिया अपनाई जाती है इसके लिये शोध की समस्या का चयन करने के पश्चात् एक क्षेत्र का चयन किया जाता है जो समग्र का प्रतिनिधित्व करे। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को निम्नलिखित क्षेत्रों तक परिसीमित किया गया है –

1. प्रस्तुत शोध केवल उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर ही किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध केवल 800 शिक्षकों पर ही किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में केवल राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों को ही शामिल किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध में दत्त संकलन के लिए राजस्थान के हनुमानगढ़ एवं हरियाणा के सिरसा जिले को ही लिया गया है।

शोध अध्ययन की विधि :

प्रस्तावित शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्तरीकृत न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुये न्यादर्श का चयन किया गया है। हनुमानगढ़ व सिरसा जिले में संचालित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 800 शिक्षकों को साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चुना

Copyright @ 2023 Author

गया है। जिसमें 400 शिक्षक हनुमानगढ जिले के राजकीय विद्यालयों व 400 शिक्षक सिरसा जिले के राजकीय विद्यालयों से है। 400 शिक्षकों में से 200 शिक्षक शहरी व 200 शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र से है।

उपकरण :

शोधकर्त्ता की महत्ता उपकरण पर निर्भर करती है क्योंकि उनकी उपयुक्तता, वैधता, विश्वसनीयता पर ही प्रदत्तों की वैधता व विश्वसनीयता निर्भर करती है। अतः इस शोधकार्य में शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। ये उपकरण शिक्षकों के लिए है।

- स्वनिर्मित शिक्षक अभिवृत्ति मापनी

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष :–

हनुमानगढ़ एवं सिरसा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति की तुलना हेतु 15 परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया। परिकल्पनाओं का वर्गीकरण एवं विश्लेषण व सार्थकता की जॉच की गई जिनके परिणाम निम्न है –

1. हनुमानगढ़ जिले के शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.1 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.94 प्राप्त हुआ है 798 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. हनुमानगढ़ जिले के शहरी शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.2 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.46 प्राप्त हुआ है 398 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2. 59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के शहरी शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.3 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.40 प्राप्त हुआ है 398 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2. 59 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्तिमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.4 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.82 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्तिमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
5. हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.5 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.57 प्राप्त हुआ है 198 (DF)स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
6. हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.6 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.56 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्तिमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

Copyright @ 2023 Author

7. हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.7 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.85 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
8. हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.8 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.30 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
9. हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की गतिविधि आधारित अधिगम कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.9 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.35 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
10. हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.10 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.11 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
11. हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.11 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.60 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले की शहरी महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
12. हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.12 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.76 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्तिमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
13. हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.13 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.29 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों एवं सिरसा जिले के शहरी पुरूष शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्तिमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
14. हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.14 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 0.54 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः

 Copyright @ 2023 Author

 ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.01, September: 2023

1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की शहरी महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

15. हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला प्राथमिक शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्तिमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तालिका संख्या 4.1.15 के अनुसार इनके मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने हेतु टी मूल्य 1.09 प्राप्त हुआ है 198 (DF) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर का मान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी–मूल्य सारणी में दिए गए दोनों मानों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई तथा इस आधार पर कहा जा सकता है कि हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण पुरूष शिक्षकों एवं सिरसा जिले की ग्रामीण महिला शिक्षकों की स्काउटिंग एवं गाइडिंग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शैक्षिक उपयोगिता :–

अनुशासन, एकता, क्रियाशील, संगठन, नेतृत्व, सेवा, देश–प्रेम और सच्ची नागरिकता के प्रति कैडेटों को जागरूक करने का प्रयास ही स्काऊट एवं गाइड के प्रषिक्षण का अभिन्न अंग है। स्काऊट एवं गाइड का सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में अपूर्व योगदान होता है। अनुशासित कैडेट सबके आकर्षण का केन्द्र व सबकी आवश्यकता होती है, जिसे विकसित करना स्काऊट एवं गाइड अपना लक्ष्य मानता है। स्काऊट एवं गाइड आत्म निर्भरता एवं आत्मविश्वास जागृत करके युवा कैडेड्स–नेतृत्व की अनुभव क्षमता प्रदान करने में सर्वदा सक्षम है,जिससे ये न केवल अपने प्रति अन्याय से रक्षा बल्कि समाज एवं राष्ट्र की दिशा एवं विचारधारा को भी बदलने में सक्षम होते हैं।

गत् आठ दशक से भी अधिक समय से स्काउटिंग के उपरोक्त गुणों एवं उपयोगिता के आधार पर ही इसे बालोपयोगी बनाया जा रहा है ताकि विष्व के बालक–बालिकाएं आरम्भ से ही अपना चरित्र निर्माण कर सुनागरिक बन सके। स्काऊटिंग गाइडिंग के कैडेट्स द्वारा बालकों को प्रकृति के सम्पर्क में लाया जाता है। शिक्षकों द्वारा शारीरिक एवं नैतिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है, परन्तु इसकी सबसे बड़ी उपयोगिता इस बात में है कि स्काऊटिंग गाइड के द्वारा अनुत्तरदायी एवं स्वकेन्द्रित बालक को विश्वसनीय एवं सहायक नागरिक में परिवर्तित किया जाता हैं। स्काऊटिंग गाइड के द्वारा बालक एवं बालिकाओं को खेल में समस्त प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

शिक्षक बालक–बालिकाओं को सामुदायिक कार्य की भावना की शिक्षा दें कि वे उस समूह के जीवन में कुशलतापूर्वक भाग ले सके, विद्यालयों को सामुदायिक कार्य की भावना को जीवन का केन्द्र बनाना चाहिए जिससे बालकों में समाज अथवा राष्ट्र के विकास हेतु राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, संवेगात्मक एकता, आत्म निर्भरता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना, राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने की भावना, समाजिक कुशलता, उत्तम नागरिक तथा नेतृत्व आदि अनेक गुण विकसित हो जाए और वे अपने भावी जनतांत्रिक जीवन के कर्त्तव्यों तथा अधिकारों का उचित प्रयोग कर सकें। सामुदायिक कार्य बालक की शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण सक्रिय तथा अनौपचारिक साधन है। जिस प्रकार बालक की शिक्षा पर परिवार तथा स्कूल का गहरा प्रभाव पड़ता है। उसी प्रकार सामुदायिक कार्य भी बालक के व्यवहार में परिवर्तन करता है। वह सामुदायिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर देता है।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षकों की सहायता से स्काऊट गाइड के कैडेट्स एवं सामान्य विद्यार्थियों में सामुदायिक कार्य एवं सामाजिक दायित्व की भावना उत्पन्न करने में सफल सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार के शोध कार्य इस क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करेंगे। शोधकर्ता इस प्रकार की समस्याओं पर भविष्य में निरन्तर कार्य करने का प्रबल इच्छुक है।

भावी शोधार्थियों हेतु सुझाव :–

1. यह शोधकार्य शिक्षकों के अतिरिक्त विद्यार्थियों व अभिभावकों पर भी किया जा सकता है।
2. यह शोधकार्य केवल दो जिलों के शिक्षकों पर किया गया है। इसके अतिरिक्त यह शोधकार्य अन्य जिलों या अन्य क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों पर भी तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित शोध भी किया जा सकता है।
4. इस शोध कार्य में जहां केवल 800 प्रतिदर्शों को लिया गया है, वहीं 800 से अधिक प्रतिदर्शों को भी लिया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध कार्य में पुरुष व महिला तथा ग्रामीण व शहरी चरों को ही सम्मिलित किया गया है जबकि अन्य चरों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
6. भावी शोध कार्य में सामुदायिक कार्य एवं सामाजिक दायित्व की भावना चरों को सम्मिलित किया जा सकता है।
7. इस शोध में केवल विद्यालयी आधार पर तुलनात्मक कार्य किया गया है। भावी शोधकर्ता सामाजिक–आर्थिक स्तर, धर्म, राष्ट्रीय एवं भौगोलिक आधार पर वर्गीकृत कर अपना शोधकार्य कर सकता है।

 Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-09, No.01, September: 2023

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अग्रवाल, कृष्ण चन्द्र, (2000), गागर में सागर की ओर (भाग प्रथम), जयपुरः ऊषा स्काउट गाइड पब्लिकेशन।
2. पॉवल, लार्ड बेडन, (1994), स्काउटिंग फॉर ब्वायज, दिल्लीः एन. एच. क्यू. पब्लिकेशन।
3. जौहरी, सोहन लाल, (2006), प्रगति पथ, दिल्लीः एन. एच. क्यू. पब्लिकेशन।
4. अग्रवाल, अमरनाथ, (2005), स्काउट गाइड आंदोलन, इतिहास एवं नियम, जयपुरः ज्ञानेन्द्र प्रकाशन।
5. अग्रवाल, कृष्ण चन्द्र (2006), A.P.R.O. II, दिल्लीः एन. एच. क्यू. पब्लिकेशन।
6. अग्रवाल, अमरनाथ (2008), प्रवेश से राष्ट्रपति, बरेली : हिन्द स्काउट गाइड प्रकाशन।
7. जैन, हरीश चन्द (2001), प्रवेश से राष्ट्रपति पुरस्कार, मथुरा : भाग्योदय स्काउट एवं गाइड सेवा योजना प्रकाशन।
8. शर्मा, शशि कुमार (2014), राष्ट्रपति अवार्ड के पथ पर, गुड़गांव : सत्य स्काउट गाइड प्रकाशन।
9. शर्मा, शशि कुमार (2014), सत्य स्काउट गाइड के पथ पर, गुड़गांव : सत्य स्काउट गाइड प्रकाशन।
10. जैन, एस. आर. (2014), स्काउट गाइड ज्योति, संस्करण जनवरी–जून 2014, जयपुर : प्रीमियम प्रिन्टिग प्रैस।
11. खन्ना, अशोक कुमार (2013), दिव्य संसार, संस्करण मार्च–जुलाई, बीकानेर : सांखला प्रिन्टर्स, शिव बाड़ी रोड़।
12. शर्मा, आर. ए. (1978), शिक्षा में अनुसंधान, मेरठः सूर्या पब्लिकेशन।
13. राय, पारस नाथ, (1989) अनुसंधान परिचय, आगरा : लक्ष्मी नारायण पब्लिकेशन।
14. शर्मा, डॉ. आर. ए., (2008) तुलनात्मक शिक्षा (प्रथम संस्करण), मेरठ : राज प्रिंटर्स।
15. भार्गव, डॉ. महेश, (1985) आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा : भार्गव बुक हाउस, राजा मण्डी।
16. भार्गव, डॉ. महेश, (1994), प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति , शिक्षण अभ्यास कार्य एवं शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन, आगरा : भार्गव बुक हाउस, राजा मण्डी।
17. बेस्ट, जे. डब्लू. (1982), रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली : यू. एस. प्रिन्टर्स हाल।
18. घोष, एन. के. (1989), स्टेटिस्टिक थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस, इलाहाबाद : द इण्डियन प्रेस लि.।
19. शिविरा, (जुलाई, 1998), वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों की बैठक।

Copyright @ 2023 Author